om 1 Delhi Final 1_Page 1 and 2 18/03/2015 10:57 Page 7

बेशकीमती तोहफे को सहेजो

दुनिया के सभी प्राणियों में मनुष्य शारीरिक रूप से सबसे कमज़ोर है। आदमी चिड़िया की तरह उड़ नहीं सकता, तेंदुए से तेज़ दौड़ नहीं सकता, एलीगेटर की तरह तैर नहीं सकता, और बंदर की तरह पेड़ पर चढ़ नहीं सकता। आदमी की आँख चील की तरह तेज़ नहीं होती, न ही उसके पंजे और दाँत जंगली बिल्ली की तरह मज़बूत होते हैं। जिस्मानी तौर पर आदमी बेहद लाचार और असुरक्षित होता है। वह एक छोटे से कीड़े के काटने से मर सकता है। लेकिन कुदरत समझदार और दयालु है। उसने इंसान को जो सबसे बड़ा तोहफा दिया है, वह है सोचने की क्षमता। इंसान अपना माहौल खुद बना सकता है, जबकि जानवरों को माहौल के मुताबिक ढलना पड़ता है। दु:ख की बात है कि कुदरत के इस सबसे बड़े तोहफे का पूरा इस्तेमाल बहुत कम लोग कर पाते हैं। असफल लोग दो तरह के होते हैं – एक तो वे, जो करते तो हैं लेकिन सोचते नहीं; दूसरे वे जो सोचते तो हैं लेकिन कुछ करते नहीं। सोचने की क्षमता का इस्तेमाल किए बिना ज़िन्दगी गुज़ारना वैसा ही है, जैसे कि बिना निशाना लगाए गोली दागना।

ज़िन्दगी उस रेस्तरां (कैफेटेरिया) की तरह है जहां हमको खुद सर्विस करनी पड़ती है। वहां हम अपनी ट्रे उठाते हैं, खाना चुनते हैं, और उसका भुगतान करते हैं। अगर हम कीमत चुकाने को तैयार हैं, तो वहां से कोई भी चीज़ ले सकते हैं। अगर हम कैफेटेरिया में किसी के आकर खाना परोसने का इंतज़ार करेंगे, तो इंतज़ार ही करते रह जाएंगे। ज़िन्दगी भी वैसी ही है। हम चुनाव करते हैं, और फिर कामयाब होने के लिए कीमत चुकाते हैं।

ज़िन्दगी चुनाव और समझौतों से भरी पड़ी है।

भाग्य केवल संयोग पर निर्भर नहीं होता, बल्कि हम उसे अपने लिए चुनते हैं। वह इंतज़ार करने की नहीं, बल्कि हासिल करने की चीज़ है। – विलियम जेनिंग्स ब्रायन

यहां दोनों बातें एक दूसरे का विरोध करती हैं। अगर ज़िन्दगी चुनावों से भरी है, तो समझौते का सवाल कहां उठता है? यकीनन, समझौता भी एक चुनाव है। आइए, इस पर विचार करें।

ज़िन्दगी चुनावों से कैसे भरी है?

जब हम अधिक खाना खाते हैं, तो अपना वज़न बढ़ाने का चुनाव खुद करते हैं। जब हम अधिक शराब पीते हैं, तो दूसरे दिन सिर में दर्द पा लेने का चुनाव हमारा अपना होता है। अगर हम शराब पी कर गाड़ी चलाते हैं, तो दुर्घटना में खुद को, या किसी और को मार देने का खतरा खुद चुनते हैं। जब हम दूसरे के साथ बुरा व्यवहार करते हैं, तो इस बात का चुनाव खुद करते हैं कि दूसरे भी हमारे साथ बुरा व्यवहार करें। जब हम दूसरों की परवाह नहीं करते, तो यह चुनाव हम खुद करते हैं कि दूसरे भी हमारी परवाह न करें।

हर चुनाव का एक नतीजा भी होता है। हम चुनाव करने के लिए तो स्वतंत्र होते हैं, लेकिन उसके बाद वह चुनाव हमें नियंत्रित करने लगता है। दूसरों से कुछ अलग बनने के लिए हम सबके पास बराबर का मौका होता है। ज़िन्दगी की तुलना गीली मिट्टी से की जा सकती है। जिस तरह कुम्हार गीली मिट्टी को मनचाही शक्ल में ढाल सकता है, उसी तरह हम भी अपनी ज़िन्दगी को मनचाहा रूप दे सकते हैं।

ज़िन्दगी समझौतों से कैसे भरी है?

ज़िन्दगी केवल मौज-मस्ती का नाम नहीं है। इसमें दु:ख और निराशा का भी सामना करना पड़ता है। ज़िन्दगी में ऐसी घटनाएं भी घटती हैं, जिनके बारे में हमने सोचा तक नहीं होता है। कई बार हर चीज़ उलट-पलट हो जाती है। अच्छे लोगों के साथ भी बुरी घटनाएं घट जाती हैं। कुछ चीज़ें हमारे काबू से बाहर होती हैं, जैसे कि अपाहिज होना, या शरीर में कोई जन्मजात दोष होना। हम अपने माँ-बाप, या पैदा होने के वक्त के हालात को तो नहीं चुन सकते। लेकिन ऐसा हो ही गया है, तो अब हम क्या करेंगे - चीखेंगे-चिल्लाएंगे या तकदीर की चुनौती को मंज़ूर करते हुए आगे बढ़ेंगे? यह चुनाव हमको करना है।

किसी साफ दिन में हमको झील में सैकड़ों नावें तैरती दिखाई देंगी। हर नाव अलग दिशा में जा रही होती हैं। क्यों? इसलिए कि उनमें पाल (शामियाना) को उसी ढंग से लगाया जाता है, और इसका फैसला नाविक करता है। यही बात हमारी ज़िन्दगी पर भी लागू होती है। हम हवा के बहाव की दिशा तो नहीं चुन सकते हैं।

सेहत, खुशी और सफलता हर आदमी के जूझने की क्षमता पर निर्भर होती है। बड़ी बात यह नहीं है कि हमारी ज़िन्दगी में क्या घटित होता है, बल्कि यह है कि जो घटित होता है, हम उसका सामना कैसे करते हैं।

–जॉर्ज एलेन

अपने हालात को चुनना तो हमेशा हमारे बस में नहीं होता, लेकिन अपना नज़रिया हम हमेशा चुन सकते हैं। यह हमारा अपना चुनाव होता है कि विजेता की तरह व्यवहार करें, या पराजित की तरह। हमारी किस्मत हमारे मुकाम से नहीं, बल्कि मिज़ाज से तय होती है।

इंद्रधनुष के बनने के लिए बारिश, और धूप, दोनों की ज़रूरत होती है। हमारी ज़िन्दगी भी कुछ ऐसी ही है। उसमें सुख है, तो दु:ख भी है, अच्छाई है, तो बुराई भी है, और उजाला है, तो अंधेरा भी है। जब हम मुसीबत का सामना सही तरीके से करते हैं, तो और मज़बूत बन जाते हैं। हम अपनी ज़िन्दगी की सभी घटनाओं पर तो नियंत्रण नहीं कर सकते, पर उनसे निपटने के तरीके पर हमारा नियंत्रण होता है।

रिचर्ड ब्लेशनीडेन सेंट लुईस विश्व मेले में भारतीय चाय का प्रचार करना चाहते थे। वहां काफी गर्मी थी। इसलिए उनकी चाय कोई नहीं पीना चाहता था। उसी बीच उन्होंने देखा कि ठंडे ड्रिंक्स की खूब बिक्री हो रही है। उनके मन में खयाल आया कि क्यों न अपनी चाय में बर्फ मिलाकर उसे ठंडे ड्रिंक्स के रूप में बेचे। उन्होंने ऐसा ही किया, और लोगों ने उनकी ड्रिंक को खूब पसंद किया। दुनिया में ठंडी चाय का चलन वहीं से शुरु हुआ। आदमी कोई बाँजफल (corn) नहीं है, जिसके पास कोई विकल्प नहीं होता। बाँजफल खुद यह तय नहीं कर सकता कि वह विशाल वृक्ष बन जाए, या गिलहरियों का भोजन बने, लेकिन मनुष्य चुनाव कर सकता है। अगर हमारे पास नींबू हो, तो हम उसे आँख में डाल कर चीख-चिल्ला सकते हैं, और उसकी शिकंजी बना कर पी भी सकते हैं।

अगर हालात बिगड़ जाएं (कभी न कभी ऐसा होता ही है), तो यह हम पर निर्भर होता है कि उनका सामना ज़िम्मेदारी से करें, या खीझते हुए करें। -**ब्र.कु. प्रीति।**

ईशरगढ़-पिपली। महाशिवरात्रि के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए जिला परिषद सदस्य जय भगवान शर्मा। साथ हैं सरपंच जी, ब्र.कु. लक्ष्मण, ब्र.कु. प्रेरणा तथा अन्य।

ढ़कौली-चण्डीगढ़। महाशिवरात्रि पर शिवध्वजारोहण के बाद ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु. प्रेम, ब्र.कु. हरविन्द्र तथा अन्य गणमान्य जन।

हाजीपुर-विहार। ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल विंग द्वारा आयोजित एक दिवसीय फ्री डेंटल मेडिकल चेकअप के उद्घाटन पश्चात् समूह चित्र में डॉ. विजय कुमार, मधुबाला, डॉ. जे.पी. सिंह, ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. आरती तथा डॉक्टर्स।

भीरा-गोला गोकर्ण नाथ। रेलवे स्टेशन मास्टर कमलेश चौधरी को आध्यात्मिक प्रदर्शनी द्वारा ईश्वरीय ज्ञान समझाते हुए ब्र.कु. सुनीता।

दसुआ। महाशिवरात्रि पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए पूर्व चीफ इंजीनियर अमरजीत सिंह, ब्र.कु. ज्ञानी, ब्र.कु. सुमन तथा ब्र.कु. स्मृति।

दिल्ली-पीतमपुरा। 'अलविदा तनाव एवं मेडिटेशन शिविर' का केक काटकर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. प्रभा तथा अन्य।

देवबंद-उ.प्र.। शिव जयंती के उपलक्ष्य में एस.डी.एम. राजेश कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुदेश व ब्र.कु. सुधा। साथ हैं चौधरी भूपेन्द्र सिंह व अन्य।

सादड़ी-राज.। राष्ट्रीय संत रामप्रसाद जी के सेवाकेन्द्र आने पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. शुचीता तथा अन्य।